

208. Vgl. Spruch 4496.

241. ÇATAKĀV. 33. *d.* क्षिपति रतितस्तु प्रति मुहुः.

243. = VRDDHA-KĀṆ. 7, 1 (*b.* गृहिणीचरितानि च. *c.* नीचवाक्यं चापमानं). ÇUK. ed. Bomb. S. 34 (*c.* वचनं st. वचनं).

220. ÇATAKĀV. 103. *b.* मे st. नः. BHARṬ. 3, 53 lith. Ausg. III. *b.* वाधिदर्प, अन्त्ये पादवं.

226. = MBH. 12, 218, *b.* 219, *a.* *a.* अर्थेनेह (अर्थेन हि ed. Bomb.). *c.* विच्छिद्यते.

227. = MBH. 12, 216, *b.* 217, *a.* *b.* संभृतेभ्यस् (die richtige Lesart) st. संवृतेभ्यस्. *c.* Umgestellt: क्रियाः सर्वाः प्रवर्तते.

228. Vgl. Spruch 3603.

229. ÇATAKĀV. 68. *c.* लतावर्जितं कर्कराम्भो. BHARṬ. 1, 47 lith. Ausg. III. *a.* खिन्नाः. *b.* तर्पो st. तृष्णो. *c.* भुजतावर्जितं कर्करांते. BÖHTL. — Nach meiner Ansicht trinkt der unglückliche Liebhaber darum nicht das klare Herbstwasser, weil es von der Geliebten in Folge der Mattigkeit ihres Armes ausgegossen und verschüttet worden ist. SCHÜTZ.

237. = KAVITĀMṚTAK. 33.

240. = KĀṆ. 67 bei WEBER mit bessern Lesarten. *a.* अवंशजनिता (जनीतो, जन-भीतो). *c.* अधनो st. अधनेन.

247. *b.* किरति st. वमति HALL in der Einl. zu VĀSAVAD. S. 48.

249. = KĀṆ. 6 bei WEBER. *a.* अविद्यं (besser). *b.* कृतबान्धवा st. चेद°. *c.* अपुत्रस्य गृहं.

253. = VRDDHA-KĀṆ. 6, 21. *a.* सुश्रातो ऽपि वहेद्भारं (auch वहेत् भारं). *b.* न च पश्यति st. च न विन्दति. *c.* संतुष्टश्चरते नित्यं. *d.* शितेच्च.

263. Lies in der Uebersetzung der Ambikā st. des A.

270. BHARṬ. 3, 56 lith. Ausg. III. *b.* वशीमहि.

271. PRASAṅGĀBH. 6, *b.* in folgender Fassung: अश्वमेधसकृन्नस्य फलं सत्यं तुलांतरे । धृत्वा संलोड्यते राजन् सत्यं भवति गौरवम् ॥

276. *d.* धमाङ्गा (= काकाः) st. घाङ्गा Comm.

277. = KĀṆ. 36 bei WEBER (*b.* संतुष्टाश्चैव पा°. *d.* निर्लज्जाः सुकुल°). VRDDHA-KĀṆ. 8, 18 (*b.* संतुष्टाश्च महिभूतः. *d.* कुलाङ्गनाः).

283. = MAHĀN. 179. *c.* समासन्न (besser) st. समापन्न. *d.* हि (besser) st. ऽपि, मलिनीभवति.

289. ÇATAKĀV. 68. *a.* सत्येते st. सत्तेते. BHARṬ. 1, 51 lith. Ausg. III. *a.* विरसविरसाश्चैव st. विरतिविरसायाम्.

294. ÇATAKĀV. 67. *b.* शश्वत्पतति जलदान्नीरनिचये. BHARṬ. 1, 45 lith. Ausg. III. *b.* प्राप्ते st. प्राये. STENZLER zieht in *d.* die Lesart पथिष्वेव सु° schon auf dem Wege mit Recht vor.